संदर्भ ग्रंथ सूची

आधार ग्रंथ

क्र.सं.	लेखक	पुस्तक का नाम	प्रकाशक
1.	अमीश त्रिपाठी	लंका का युद्ध	वेस्टलाण्ड पब्लिकेषन्स, चेन्नई, 2022
2.	नरेंद्र कोहली	अवसर	वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2021
3.	अमीश त्रिपाठी	सीता मिथिला की योद्धा	वेस्टलाण्ड पब्लिकेषन्स, चेन्नई, 2019
4.	अमीश त्रिपाठी	रावण आर्यवर्ता का शत्रु	वेस्टलाण्ड पब्लिकेषन्स, चेन्नई, 2019
5.	अमीश त्रिपाठी	राम इक्षवाकु के वंशज	वेस्टलाण्ड पब्लिकेषन्स, चेन्नई, 2018
6.	नरेंद्र कोहली	दीक्षा	वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2016
7.	नरेंद्र कोहली	संघर्ष की ओर	वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2012
8.	नरेंद्र कोहली	युद्ध भाग – 1	वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2012
9.	नरेंद्र कोहली	युद्ध भाग – 2	वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2012

सहायक ग्रंथ सूची

क्र. सं.	लेखक / संपादक	पुस्तक का नाम	प्रकाशक
1.	विनय विश्वास	तुलसी दास की काव्य शक्ति	नए किताब प्रकाशन, 2022
2.	डॉ. अमिल कुमार तिवारी	मिथक और साहित्य विविध संदर्भ	इंडिया नेट्बूक, 2021
3.	वाल्मिकी	श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण	गीता प्रेस, गोरखपुर, 2021
4.	अमीश त्रिपाठी	धर्म	वेस्टलाण्ड पब्लिकेषन्स, चेन्नई, 2020
5.	नरेंद्र कोहली	रामकथा	हिंदी पॉकेट बुक्स, नई दिल्ली, 2018
6.	डॉ. पशुपतिनाथ उपाध्याय	साहित्य और संस्कृति	जवाहर पुस्तकालय, मथुरा, 2017
7.	डॉ. देवदत्त पट्टनायक	मिथक – हिंदु आख्यानों को समझने का प्रयास	पेंगुइन बुक्स इंडिया, 2015
8.	डॉ. सत्यकेतु विद्य़ालंकार	भारतीय संस्कृति का विकास	श्री सरस्वती सदन, दिल्ली, 2014
9.	बाल कृष्ण राव	भारतीय संस्कृति के सौपान	सुनीता प्रकाशन, जयपुर, 2014
10.	डॉ. रीज आर. एस	नरेंद्र कोहली के उपन्यास आधुनिकता के संदर्भ में	गोविन्द पचौरी, जवाहर पुस्तकालय, 2014
11.	तुलसीदास	श्री रामचरितमानस	गीता प्रेस, उत्तर प्रदेश 2014
12.	प्रकाश परिमल	भारतीय दर्शन और संस्कृति का मेरुदंड : वेद	जयपुर पब्लिशिंग हाउस, जयपुर, 2013
13.	लीलाधर शर्मा 'पर्वतीय'	भारतीय संस्कृति कोश	राजपाल एंड सन्ज़ दिल्ली, 2013
14.	विजय लक्ष्मी मेहन्त	कामायनी का जीवन दर्शन	अमर प्रकाशन, मथुरा, 2013
15.	चेतन शर्मा	भारत के धर्म संप्रदाय	दीपक ऑफसेट्, दिल्ली 2013
16.	डॉ. जयंती प्रसाद भौटियल	धर्म, विज्ञान और समाज	मानसी पब्लिकेशन्स, दिल्ली, 2012
17.	स्वामी करापत्री जी महाराज	रामायाणमीमांसा	श्री धानुका प्रकाशन कलकत्ता, 2012

क्र. सं.	लेखक / संपादक	पुस्तक का नाम	प्रकाशक
18.	सचिन प्रखान	प्राचीन भारत की कला और संस्कृति	नवदीप पॉकेट बुक्स, दिल्ली, 2012
19.	होमर	ओडिसी	राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2012
20.	डॉ लीना बी. एल	मिथक नाटक और रंगमंच	जवाहर पुस्तकालय, मथुरा, 2012
21.	डॉ. के. सी. सिन्धु	रामकथा कालजयी चेतना	वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2012
22.	होमर	इलियड़	राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2012
23.	डॉ. प्रदीप सी. लाड़	नरेंद्र कोहली के उपन्यासों का अनुशीलन	अभय प्रकाशन, कानपुर, 2012
24.	छबील कुमार मेहेरे	तुलनात्मक साहित्य	शबनम पुस्तक महल, ओडिशा, 2011
25.	डॉ. शिवकुमार शर्मा	हिंदी साहित्य; युग और प्रवृत्तियाँ	अशोक प्रकाशन, दिल्ली, 2011
26.	कर्तार सिंह दुग्गल	भगवान है कि नहीं	शिलालेख, सुभाष बाली, दिल्ली, 2011
27.	चंद्रकांत बांदिवेड़कर	भारतीय साहित्य पर महाभारत का प्रभाव	आर्य प्रकाशन मंडल, दिल्ली, 2011
28.	राना	युद्ध के विरुद्ध	संरचना प्रकाशन मंदिर, 2010
29.	डॉ. पी. संजयन	मुक्तिबोध काव्य संरचना का रस संदर्भ	जवाहर पुस्तकालय, मथुरा, 2010
30.	डॉ. उमाशंकर शुक्ल	तुलसी काव्य में लोक तत्व	सुरभी प्रकाशन, इलाहबाद, 2010
31.	दुर्गा प्रसाद गुप्त	आस्थाओं का कोलाज़, रामशरण जोशी के लेखन में से एक चयन	ज्योत्सना प्रकाशन, दिल्ली, 2010
32.	डॉ देवनारायण यादव	वाल्मीक रामायण में गृहस्थ जीवन	कला प्रकाशन, वाराणसी, 2010
33.	डॉ. प्रभाकरन हेब्बार	संस्कृति, भाषा और साहित्य	जवाहर पुस्तकालय, मथुरा, 2009
34.	नरेन्द्र कोहली	नरेन्द्र कोहली ने कहा	वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008
35.	ए. अरविन्दाक्षन	साहित्य, संस्कृति और भारतीयता	जवाहर पुस्तकालय, मथुरा, 2008
36.	रमेश कुंतल मेघ	मिथक से आधुनिकता तक	वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008
37.	डॉ. बदरीनाथ कपूर	बृहद हिन्दी – अंग्रेजी कोश	प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, 2007
38.	डॉ. नाथूराम राठौर	हिंदी राम काव्य के पात्रों का तुलनात्मक अध्ययन	जवाहर पुस्तकालय, मथुरा, 2007
39.	डॉ. प्रमोद कुमार अग्रवाल	चित्रकूट में राम – भरत मिलाप	पीताम्बरा बुक्स प्राइवेट लिमिटेड, 2007
40.	डॉ जयदेव सिंह यादव	मत्स्य पुराण में हिन्दू देवी देवताओं का सामाजिक अध्ययन	नवराज प्रकाशन, भजनपुरा, दिल्ली, 2006
41.	ऋचा मिश्रा	साकेत समीक्षा	विकास प्रकाशन, कानपुर, 2005
42.	उषा पुरी	भारतीय मिथक कोश	नाषणल पब्लिषिंग हाऊस, नई दिल्ली, 2004
43.	स्वामी विवेकानंद	ब्रह्मांड विज्ञान	प्रतिमा प्रकाशन, दिल्ली, 2004
44.	ब्रजभूषण राजवंशी	मुख्य धर्मों का आदि स्रोत	चेतन साहित्य मंदिर, नई दिल्ली, 2004
45.	डॉ. पुरुषोत्तम वाजपेयी	विनय पत्रिका के विविध आयाम	गरिमा प्रकाशन, कानपुर, 2004
46.	डॉ. सर्वेपल्ली राधा कृष्णन	भारतीय संस्कृति कुछ विचार	सरस्वती विहार, 2004

क्र. सं.	लेखक / संपादक	पुस्तक का नाम	प्रकाशक
47.	डॉ. पी. जयरामन	भक्ति के आयाम – कृष्ण भक्ति साहित्य	वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2003
48.	राजा प्रताप सिंह	रामायण प्रश्नोत्तरी	राष्ट्र धर्म प्रकाशन, 2002
49.	डॉ. उषा जैन	छायावादोत्तर हिन्दी काव्य में बिंब विधान	विकास प्रकाशन, कानपूर 2002
50.	डॉ पूर्णिमा केडिया	हिंदी राम काव्य में नारी	जया भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2002
51.	डॉ. रामअवतार पाण्डेय	तुलसी कृत विनय पत्रिका का काव्यशास्त्रीय अध्ययन	विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणासी, 2001
52.	डॉ. अहमद हुसैन	भारतीय कृष्ण काव्य में श्रृंगार	जवाहर पुस्तकालय, मथुरा, 2001
53.	बी. लक्ष्मयया शेट्टी	साकेत – गाइड	लक्ष्मी हिंदी विद्यालय, लालपेट, गुटूर, 2001
54.	डॉ. वी. एन. फिलिप	मध्यकालीन हिंदी भक्ति साहित्य की प्रासंगिकता	जवाहर पुस्तकालय, मथुरा, 2000
55.	नारायण चंद्र राणा	ग्रहण : मिथक और यथार्थ	विज्ञान प्रसार, नई दिल्ली, 1999
56.	प्र. ग. सहस्रबुद्धे	लुप्त वैदिक सरस्वती	राष्ट्रधर्म प्रकाशन, लखनऊ, 1999
57.	बाल्मीकि प्रसाद सिंह	संस्कृति, राज्य, कलाएँ और उनसे परे	राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1999
58.	डॉ. दुर्गादास काशीनाथ संत	शोध विज्ञान कोश	वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 1996
59.	प्रो. जी. बी. कानूनगो	सत्य रामायण	हिन्दी बुक सेन्टर, नई दिल्ली, 1995
60.	डॉ. गोविन्द चातक	संस्कृति : समस्या और संभावना	तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली, 1994
61.	लू शून	कला, साहित्य और संस्कृति	वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 1994
62.	डॉ. रवींद्र कुमार सिंह	संत काव्य की सामाजिक प्रासंगिकता	वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 1994
63.	निर्मला जैन	पाश्चात्य साहित्य चिंतन	राधा कृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली,1990
64.	बी. एच. राजूरकर, डॉ. राजमाल बोरा	तुलनात्मक अध्ययन, स्वरूप एवं समस्याएँ	वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 1990
65.	डॉ. शीला राजवर	स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कथा साहित्य में नारी के बदलते संदर्भ	ईस्टर्न बुक लिंकर्स, 1989
66.	श्री. एस. पी वर्मा	विश्व के विविध धर्म	दयालबाग एजुकेशनल गुप्त इंस्टिट्यूट, आगरा 1989
67.	डॉ. नगेन्द्र	मिथक और साहित्य	नाषणल पब्लिषिंग हाऊस, नई दिल्ली, 1987
68.	इंद्रनाथ चौदरी	तुलनात्मक साहित्य की भूमिका	नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 1983
69.	मान्धाता सिंह	विज्ञान और वेदान्त	ज्ञान विज्ञान प्रकाशन, बिहार, 1981
70.	डी डी कोसांबी	मिथक और यथार्थ	दि मैकमिलन कंपनी ऑफ इंडिया लिमिटड , 1976
71.	भवभूति, जय कृष्ण हरीदार गुप्ता	उत्तरा रामचरिता	द चौकम्भा संस्कृत सीरीज़ ऑफिस, 1953

क्र. सं.	लेखक / संपादक	पुस्तक का नाम	प्रकाशक
72.	Edith Hamilton	Mythology Timeless Tales of Gods and Heroes	Black Dog & Leventhal Publishers, New York, 1942
73.	डॉ. वीरेंद्र सिंह	मिथक दर्शन का विकास	स्मृति प्रकाशन, इलाहबाद, 1884
74.	श्री गुरुदत्त	वेद और वैदिक काल	शाश्वत संस्कृति परिषद, नई दिल्ली, 1675
75.	डॉ. रामेश्वर दयाल	मध्ययुगीन कृष्ण – भक्ति परंपरा और लोक संस्कृति	हरिराम द्विवेदी, पाण्डुलिपि प्रकाशन, दिल्ली 1675
76.	रीमा तिवारी	हमारे अवतार एवं देवी – देवता	रीमा तिवारी, दिल्ली

पत्र – पत्रिकाएँ

क्र.सं.	लेखक	लेख का शार्षक	पत्रिका	ISSN No.	अंक	वर्ष
1.	डॉ. रेखा उप्रेती	मिथक और साहित्य	साहित्य कुञ्ज	2292 -9754	186	2021
2.	नंदिता. यु. एम	उर्मिला – द फॉरगॉटन हेरोइन: रीरीडिंग रामायण	रिसर्च जर्नल ऑफ़ इंग्लिश लांग्वेज एण्ड लिटरेचर	2321 - 3108	9	2021
3.	सुरेश भाई पटेल	वाल्मीकि रामायण में पुराकल्पन	टुवर्ड्स एक्सीलेंस	0974 - 035X	2	2020
4.	वालेनीरा गंबेरी	एस्केपिंग फ्रॉम रामा	टेलर एंड फ्रांसिस	354 - 372	15	2014
5.	हेमंत शर्मा	रामायण “प्रबंध का मूल” विजयसूत्र अभिप्रेरणा	रिसर्च जर्नल ऑफ़ ह्युमानिटीस	0975 - 6795	3	2012

S.NO	WEBSITE
1.	https://sacred-texts.com/cla/gpr/gpr06.htm
2.	https://www.youtube.com/watch?v=MiWhO8-Agjo&t=134s
3.	https://www.youtube.com/watch?v=HeX6CX5LEj0&t=310s
4.	https://timesofindia.indiatimes.com/topics/amish-tripathi
5.	https://timesofindia.indiatimes.com/topic/narendra-kohli
6.	https://yourstory.com/hindi/7ff9dea0b3-narendra-kohli-is-the
7.	https://apkaakhbar.in/dr-narendra-kohli/
8.	https://youtu.be/bAKOWxDmGLI?si=_Xmc8U-GcaFo61a9
9.	https://youtu.be/MgyUBIJXjsQ?si=oDfUV9ylRUYUAWO
10.	https://youtu.be/Ri-AoKE42rw?si=lJaiCRH0H5T_Um1G
11.	https://youtu.be/EY8yI_JaGWQ?si=IQRm8l3kkDJpcDXM
12.	https://youtu.be/2oxzmJPoRu8?si=jsLt07WACHjVvMkF

S.NO	WEBSITE
13.	https://youtu.be/yMTX_woOjcs?si=dcP4spZkTHca_bNU
14.	https://youtu.be/eNGbTMYvq4Q?si=Q5NnA3PVnajfdEEP
15.	https://youtu.be/Xgz_WCa-0s4?si=DRIpStY4cnRmkYts
16.	https://youtu.be/Dq4NtNZg3nI?si=OJr1RnLS7aYRbkZ2
17.	https://youtu.be/IyrZZD29Jyo?si=_cG5aobxI02lkfQI
18.	https://youtu.be/nPo81UV6p4U?si=60_zk9GxT65LxDp_
19.	https://youtu.be/PNkqugI6rKI?si=FbAstIfN5f-C0YNT
20.	https://www.jstor.org/stable/29791159?read-now=1#page_scan_tab_contents
21.	https://www.jstor.org/stable/40014906?read-now=1#page_scan_tab_contents
22.	https://rrjournals.com/index.php/rrijm/article/view/144

Avinashilingam Institute for HomeScience and Higher Education for Women
(Deemed to be University Estd. u/s 3 of UGC Act 1956, Category 'A' by MHRD
Re-accredited with A++ Grade by NAAC. CGPA 3.65/4, Category I by UGC
Coimbatore - 641 043, Tamil Nadu, India

Appendix L2

(Item No 5 of Check List) Details of Research Publications

S.No	Article	Journal	Other Details Vol/No/Page No/ Year	Published in UGC-CARE / Scopus Indexed/ Web of Science
1	Narendra kohli Aur Amish Tripathi ke Drishtikaun Mein Sita	Keral Jyothi	Vol - 60 Pg No- 20 - 23 Year - 2023	UGC Care
2	Paschatya Evm Bharathiya Nataak Mein krishi Jeevan	Shivna Sahityiki	Vol - 32 Pg No- 35 - 37 Year - 2024	UGC Care

*Proof of list of Journals from Internet to be attached along with copies of reprints.

Scholar : [signature]

Supervisor : G. Shanthi 07.02.24.

[signature] 07-02-2024

Checked By:

HoD/Dean of Respective School

Miss. Niraja, T.K (20PHHIF004) has published her article in the following journals indexed in UGC care Group I :

1. Keral Jyothi - from April 2022 to present and
2. Shivna Sahityiki - from July 2021 to present.

This may be considered.

[signature]
07.02.24.

नरेंद्र कोहली और अमीश त्रिपाठी के दृष्टिकोण में सीता

नीरजा. टी.के.

शोध सार-मिथक लोगों को उनकी रीति-रिवाज एवं परंपराओं को समझने में मदद करता है।यद्यपि रामायण एक ऐसा महाकाव्य है जो पुनः कथन एवं पुनः व्याख्यान की संशोधनवादी लेखन कार्यों में सबसे लोकप्रिय रहा है, किंतु यह ध्यान देने वाली बात है कि इस महाकाव्य में हर पात्र को उतना महत्व नहीं मिला है जितने कि वे हकदार थे। सीता शायद रामायण की ऐसी नारीवादी केंद्रीय पात्र हैं, जो पति पारायण नारी के लिए एक उचित उदाहरण है। उसे देवी लक्ष्मी का अवतार, दयालु, साहसी एवं सहानुभूति पूर्ण पात्र के रूप में चित्रित किया गया है। इक्कीसवीं सदी के रामायण के पुनः कथन का आधार वही है किंतु नरेंद्र कोहली और अमीश त्रिपाठी ने सीता नामक पौराणिक पात्र को अपने लेखन कार्य में भिन्न रूप से दर्शाया है। इस लेख में उस पर प्रकाश डाला गया है।

बीज शब्द - सीता, रामायण, आधुनिक नारी, आदर्श पत्नी, योद्धा

अयोध्या की रानी एवं राम की पत्नी सीता, देवी लक्ष्मी की अवतार हैं। राजा जनक को हल से खेत जोतते समय सीता मिली और उन्होंने सीता को अपने पुत्री की तरह पाला। बड़ी होने के बाद सीता की स्वयंवर के लिए जनक एक परीक्षा निर्धारित करते हैं कि कोई भी व्यक्तिजो सीता से विवाह करना चाहते हैं उन्हें शिव के धनुष की प्रत्यंचा चढ़ाने में सक्षम होना पड़ेगा जो एक साधारण व्यक्ति के लिए असंभव था।परंतु रघुनंदन राम इस प्रतियोगिता में विजय प्राप्त कर लेते हैं और सीता से उनका विवाह संपन्न हो जाती हैं।

सीता एक आदर्श पत्नी और महिला का प्रतिनिधित्व करती है। अपने पति के प्रति सीता जी के हृदय में जो निष्ठा थी असीम एवं अपार थी। वनवास के दौरान जंगल में रहते हुए भी उनकी चेहरे की सामग्री एवं चमक कभी कम नहीं हुई। राम के प्रति अपने प्रेम और निष्ठा को साबित करने के लिए उन्हें कई परीक्षाओं से गुज़रना पड़ता है और वह उन सब में उत्तीर्ण हो जाती है। भारतीय नारियों से पवित्रता की अपेक्षा सदियों से रखी गई है तथा सीताजी इसकी सबसे बड़ी सबूत है। रावण के कैद में सीता जिस दर्द से गुज़रती है, उसकी तुलना में राम रावण युद्ध की पश्चात सीता का राम द्वारा वन में छोड़ जाने पर जो उनको पीड़ा जो मिली उससे कम ही है। आज देवी के रूप में पूजा की जाने वाली इस मिथकीय पात्र को भी कभी समाज ने अपवित्र समझकर इन्हें अयोध्या से निर्वासित कर दिया था। इस पौराणिक पात्र को उनकी वीरता एवं विशुद्धता के साथ नरेंद्र कोहली एवं अमीश त्रिपाठी ने अभ्युदय (दीक्षा, अवसर, संघर्ष की ओर, युद्ध-1, युद्ध-2) और सीता मिथिला की यैद्धा में अपने तरीके से उनके राम कथा शृंखला में चित्रित किया है।

नरेंद्र कोहली की सीता-अभ्युदय के संदर्भ में

राम कथा के मुख्य पात्र सीता को नरेंद्र कोहली जी ने एक आदर्श नारी के रूप में चित्रित किया है। शिक्षा असर संपत्ति और युद्ध एक और युद्ध दो हमें सीता के चरित्र में शुद्ध मानवीय गुण देखने को मिलता है। सीता का अज्ञानकुलशीला होने का एवं उनके सौंदर्य का उल्लेख इसमें बार-बार होता है। विश्वामित्र कहते हैं कि सीरध्वज ने यह नहीं सोचा था कि जब कन्या युवती होगी तो जाति-पांति, कुल-गोत्र और ऊँच-नीच की मान्यताओं में जकड़े इस समाज में उसके विवाह की समस्या कितनी जटिल होगी; और यह समस्या तब और भी जटिल हो जाएगी तब सीता रूपवती युवती होगी। आज सीता चमत्कारिक रूपवती युवती है, जिसके सौंदर्य की चर्चा सम्राटों के प्रासादों के भी बाहर, आर्यवर्त के बहुत परे तक राक्षसों देवताओं, गंधर्वों, किन्नरों, नागों

आदि के राज महलों में भी हो रही है। पुत्र इससे एक और जहाँ सीता जैसी गुणशीला, रूपवती युवती की जाति-विचार के पिशाचों के हाथों हत्या नहीं होगी और उसका विवाह अपने योग्य वर के साथ होगा (दीक्षा, नरेंद्र कोहली, पृ. सं 157,158,159)।

इस कथा में सीता के हृदय में राम के प्रति जो प्रेम है वह बहुत ही अगाध है। इसी वजह से उन्हें नुकसान होने की आशंका से अपने पति की क्षमताओं को जानते हुए भी लक्ष्मण पर विश्वास करती है। छल कपट से सीता के अपहरण करने के बावजूद रावण ने उन्हें अपना न पाया। सीता के हृदय में राम के लिए जो अनन्य प्रेम है उसके आगे रावण को हारना पड़ता है।

पूरे उपन्यास में सीता को राम की अनुचर के रूप में देख सकता है। अन्याय और भयानक शोषण के बीच रहने वाले वनवासियों को देखकर सीता के हृदय में उनके प्रति सहानुभूति जागती है। एक स्त्री खुद को तब पूर्ण महसूस करती हैं जब वह एक शिशु को जन्म देती है किंतु नरेंद्र कोहली की सीता लोक संगठन, शस्त्र संचालन, प्रशिक्षण, लोक शिक्षा आदि के कारण अपनी माँ बनने की इच्छा को दबाकर जीती है। यहाँ हमें सीता के भीतर एक आधुनिक नारी का रूप नज़र आता है। न्याय, समानता एवं अधिकारों के लिए राम के साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़ी रहने वाली सीता हमें इस उपन्यास में देखने को मिलता है।

सीता ने खुद को एक वनवासी के रूप में ढल लिया था। ऐसे होते हुए भी राम सीता को शस्त्र संचालन, तैरना और नाव चलाने में निपुण कर देते हैं, राम ने सीता से शस्त्राभ्यास करा दिया था- मुखर को सक्षम बना दिया था;और अब सुमेधा भी दोपहर को सीता के पास आ जाती थी। उसने उद्घोष से थोड़ा-बहुत शस्त्र परिचालन भी सीख लिया था।राम भी अपने परिवेश में दृष्टिपात करने के लिए चले जाया करते थे (अवसर, नरेंद्र कोहली, पृ. सं 156-157)।

इंद्र के पुत्र जयंत से युद्ध करते समय सीता अपने पति से मिली सैन्य प्रशिक्षण से युद्ध कौशल दिखाती है और स्वयं की रक्षा करती है। सीता हरण के समय भी रावण जैसे बलिष्ठ योद्धा पर कुशलता से बाण चलाती है। रावण को सीता को हराने के लिए धनुष की प्रत्यंचा काटना पड़ता है। अशोक वाटिका में बंदी रहने के दौरान भी वह रावण के साथ द्वंद युद्ध करने के लिए तलवार की माँग करती है।

सीता एक प्रतिभावान चिकित्सक भी थी। लोप मुद्रा और उनकी बेटी के प्रभाव से सीता ने शल्य चिकित्सा के प्रशिक्षण भी प्राप्त करती है। मैखाने लोगों के उपचार वश सेवा करती है। जब राम और लक्ष्मण अन्य ऋषिगण के साथ जन-जागृति अभियान में व्यस्त हो जाते हैं तब सीता अपनी जी जान लगाकर पिछड़ी जाति के वृद्धों, महिलाओं और बच्चों को अक्षर ज्ञान कराती है, उनको पढ़ाती है। उनके अंदर शिक्षा के प्रति रुचि बढ़ाती है और उन्हें उनके अधिकारों के प्रति जागरूक कराती हैं।

नरेंद्र कोहली की सीता में हम एक स्त्री में सुलभ देखने वाली कायरता भी देख सकते हैं। उन्होंने सीता को हर मानविक संवेदनाओं से गुज़रती हुई एक साधारण स्त्री के रूप में चित्रित किया है। कई प्रसंगों में हम सीता को अपनी मानसिक संतुलन खोते हुए भी देख सकते हैं।जब राजा जनक सीता को वीर्य शुल्का घोषित करते हैं तब सीता को विवाह से संबद्ध कई सारी चिंताएँ मन में होती हैं। कौन होगा वह व्यक्ति जो शिव धनुष को तोड़ कर उससे विवाह करेगा, इस आशंका की अग्नि परीक्षा से वह कई बार गुज़रती है। राम की ताकत एवं सामर्थ्य के ज्ञान होते हुए भी निरर्थक संदेह के कारण राम के पीछे लक्ष्मण को भी भला-बुरा कह कर भेज देती है। जिसका परिणाम स्वरूप उनकी अपहरण हो जाती है। यहाँ तक कि अपहरण होने के पश्चात् सीता कई बार अपनी साड़ी को गले में बांधकर आत्महत्या करने का प्रयास भी करती है। रावण की चाल समझकर वे हनुमान पर भी तुरंत भरोसा नहीं कर पाती।

अमीश त्रिपाठी की सीता-सीता मिथिला की यैद्धा के संदर्भ में

अमीश त्रिपाठी का उपन्यास सीता मिथिला की योद्धा में सीता एक आदर्श पत्नी, एक बहादुर एवं कुशल योद्धा, और एक प्रभावशाली राजनीतिज्ञ भी है। हिंदुस्तान टाइम्स को दिए एक साक्षात्कार में अमीश जी कहते हैं कि सीता सिर्फ एक आज्ञाकारी और विनम्र पत्नी ही नहीं वह एक योद्धा भी थी। मुझे यह जानकर आश्चर्य हुआ कि बहुत से लोग यह भी नहीं जानते कि वह राजा जनक की गोद ली गई पुत्री थी। बहुत सारे लोगों के साथ बातचीत करने के बाद मुझे जो अनुभूति हुई है वह यह है कि लोग भले ही रामायण के बारे में जानते हैं, किंतु इन्हें सीता की कहानी के बारे में काफी कम जानकारी है। आगे वह अपने उपन्यास के बारे में कहते हैं कि सीता को एक नारीवादी प्रतीक के रूप में देखने का अवसर पाठकों को मिलेगा और इससे महत्वपूर्ण बात यह है कि उन्हें एक योद्धा के रूप में देखेंगे अर्थात उनकी शारीरिक शक्तिके साथ उनकी मानसिक क्षमता की साक्षी बनेंगे।

सीता मिथिला की योद्धा सीता के दृष्टिकोण से लिखा गया रामायण नहीं है। यह सीता की कहानी है जिसके आखिरी हिस्से में राम एक पात्र के रूप में आते हैं। कहानी की शुरुआत शिशु सीता से होती है जिसकी रक्षा एक गिद्ध कर रही है।मिथिला के राजा और रानी को यह शिशु मिल जाता है और फिर वह सीता को अपनी पुत्री की तरह पालते है। सीता बड़ी हो जाती हैं और एक बहादुर युवा योद्धा बनती है। गुरु विश्वामित्र सीता की प्रतिभा और क्षमता को पहचान लेते हैं और यह निर्णय कर लेते हैं कि वह सीता को विष्णु के पद पर बिठाएंगे। यह पद उन व्यक्तियों को दिया जाता है जो लोगों को नए जीवन की राह दिखाते है, जो अच्छाई के प्रचारक और धर्म के संरक्षक हैं। उसी समय राम को भी विश्वामित्र के प्रतिद्वंद्वी गुरु वशिष्ठ द्वारा विष्णु की उपाधि पर बिठाने के लिए प्रशिक्षित किया जा रहा होता है।

सोलह साल की उम्र में सीता मिथिला की प्रधानमंत्री बन जाती है। जैसे ही वह उस पद में विराजमान होती है, वह अपने देश में सकारात्मक सुधार लाने का प्रयत्न करती है एवं नए कानूनों को लागू करती है। गृह निर्माण शैली और व्यवसाय से लेकर नगर की रक्षा तक सभी काम वह संभालती है। मिथिला को अपनी पुराना प्रौढ़ एवं प्रसिद्धि पुनः प्राप्त होना शुरू हो जाता है। सीता ने नगर के केंद्र में एक व्यवस्थित बाज़ार का प्रबंध कराया। जहाँ एक जैसे, स्थायी खोमचे बनाकर विक्रेताओं को दिए गए, इससे स्वच्छता और अनुशासन मुमकिन हो सका। बिक्री बड़ी छाती चौड़ी और बर्बादी में कमी आई इससे कीमतों के चक्र में बढ़ोतरी होकर व्यवसाय में उन्नति हुई (सीता मिथिला की योद्धा, अमीशत्रिपाठी, पृ. स 129-130)।

सीता को राम और सीता का विवाह कराने का और अपने प्रतिद्वंदी वशिष्ठ पर जीत हासिल करने का विश्वामित्र की योजना के संबंध में पता चलती है किंतु जब वे राम की बहादुरी के किस्से सुनती हैं तब उन्हें विश्वास हो जाती है कि राम उनसे भी अच्छा विष्णु बनेंगे। सीता के हृदय में ईर्ष्या का भाव नहीं पनपता। वह सिर्फ अपने देश और देशवासियों की शांति और भलाई चाहती थी।

इस उपन्यास के कई प्रसंगों में युद्ध कला में सीता की कुशलता को विस्तृत रूप से चित्रित किया गया है। जब रावणसैनिक उस पर हमला करते हैं तो सीता उन्हें ठीक तरह से ना देख पाने के बावजूद अपनी गंभीर श्रवण शक्ति के माध्यम से वह सबको मार गिराती है। यहाँ आंखों का कोई काम नहीं था। उन्हें अपने कानों पर ही भरोसा करना था। ऐसे महान धनुर्धर थे जो आवाज़ सुनकर ही तीर चला सकते थे। लेकिन आवाज़ के अंदाज़े पर चाकू फेंकने वाले बहुत कम थे। सीता और दुर्लभ योद्धाओं में से थी (सीता मिथिला की योद्धा, अमीश त्रिपाठी, पृ. स 4)।

आगे इस उपन्यास में ध्यान देने वाली विशेष बात यह है कि इसमें सीता के बाह्य सौंदर्य का अतिशयोक्तिपूर्ण

वर्णन नहीं किया गया है। जब श्रीराम सीता को पहली बार देखते है तो हर योद्धा के शरीर का आभूषण अर्थात चोट की निशान के सीता के शरीर में वे देखते हैं जो उनको और आकर्षक बनाती है। राम की आंखें फिर से कहीं खो गई थीं। वह सीता की कलाई में पड़े वरुद्राक्ष के कंगन को देख रहे थे। सिर्फ ईश्वर या खुद राम ही जान सकते थे कि उनके मन में क्या चल रहा था। शायद जिंदगी में पहली बार सीता को शर्म महसूस हो रही थी। उन्होंने युद्ध के निशान पड़े अपने हाथों को देखा। उनके बाएँ हाथ पर पड़ा युद्ध चिह्न ज्यादा बड़ा था। उनके विचार में उनके हाथ सुंदर नहीं थे (सीता मिथिला की योद्धा, अमीशत्रिपाठी, पृ. स 233)।

रामायण के आधार पर लिखे गये उपन्यास की कथावस्तु लगभग समान है और सदैव राम पर केंद्रित होती है। किंतु अमीश त्रिपाठी ने सीता को एक प्रमुख एवं अनूठी पात्र के रूप में प्रस्तुत किया है। जब हम इस शृंखला का पहला उपन्यास पढ़ते हैं तभी हमें सीता की पात्र काफी दिलचस्प लगती है। अमीश त्रिपाठी की सीता बहादुर और कुशल है, वह आत्मनिर्भर है, किसी के साथ वह भेदभाव नहीं करती। वह हर मायने में कानून की अनुयायी एवं निष्पक्ष नेत्री है। इन सारे गुणों ने सीता को वास्तविक रूप में एक उत्तम शासक बनाया है।

नरेंद्र कोहली और अमीश त्रिपाठी ने जिस प्रकार सीता को एक नारी के रूप में देखा है उसमें अधिक भिन्नता नहीं है। दोनों लेखकों की सीता एक योद्धा थी किंतु एक को युद्ध कौशल का प्रशिक्षण बचपन से मिली तो एक को अपने पति से विवाह के पश्चात प्राप्त हुआ। नरेंद्र कोहली की सीता एक शल्य चिकित्सक थी तो अमीश त्रिपाठी की सीता विष्णु के पद के लिए चुनी गई एक नेत्री एवं एक देश की प्रधानमंत्री थी। अमीश त्रिपाठी की सीता में शारीरिक शक्तिके साथ-साथ मानसिक स्थिरता का एक दुर्लभ मेल है किंतु नरेंद्र कोहली की सीता रावण के द्वारा अपहरण के पश्चात ऐसी दयनीय स्थिति में पहुँचती है कि वह आत्महत्या करने की प्रयास करती है।

सहायक ग्रंथ सूची

1. दीक्षा - नरेंद्र कोहली वाणी प्रकाशन 2016
2. अवसर - नरेंद्र कोहली - वाणी प्रकाशन 2021
3. रामकथा - नरेंद्र कोहली - हिंदी पॉकेट बुक्स 2019
4. सीता मिथिला की योद्धा - अमीश त्रिपाठी - वेस्टलाण्ड पब्लिकेषन्स - 2019
5. भारतीय मिथक कोश उषा पुरी - नैशनल पब्लिषिंग हाउस -2004

अन्यसंदर्भ

6. Contemporizing ramayana a study of amishtripathis novels NidhiBoora - Maharshi Day and University 2022 (http://hdl.handle.net/10603/381764)
7. नरेन्द्र कोहली के उपन्यासों में अनुशीलन प्रदीप सी लाद शिवाजी विश्वविद्यालय 2001 (http://hdl.handle.net/10603/144473)
8. The Mahasamar series by NarendraKohli (https://www.indica.today/reviews/mahasamar-narendra-kohli/)

शोध निदेशक : **डॉ. जी. शान्ति**
एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग
अविनाशिलिंगम इनस्टिट्यूट फॉर
होम सयन्स एण्ड हयर
एजुकेशन फॉर वुमेन (कोयम्बत्तूर)

शोधार्थी , हिन्दी विभाग

(शोध आलेख)

पाश्चात्य एवं भारतीय मिथक में कृषि जीवन

शोध लेखक : नीरजा. टि. के
शोधार्थी, हिन्दी विभाग
शोध निर्देशक : डॉ. जी. शान्ति,
असोसिएट प्रोफेसर,
अविनाशिलिंगम इनस्टिट्यूट फॉर होम साइंस एण्ड हायर एजुकेशन फॉर वुमेन (कोयम्बत्तूर)

नीरजा. टि. के
श्री अभिरामी इल्लम, 2/179 B2,
वनप्रस्था रोड़, वड़वल्लि, कोयम्बत्तूर - 641041, तमिल नाडु
मोबाइल- 9497231516
ईमेल- kajarint1@gmail.com

शोध सार- मिथक का अर्थ है वह परंपरागत और प्राचीन कथा जो किसी अतिमानवीय व्यक्ति या घटना से संबंधित होती है। मिथक ऐसी कथा है जो कई सहस्राब्दियों तक सुरक्षित रहती है और यह कथित प्राणियों या घटनाओं से जुड़ी होती है जो इसके प्रचारकों के लिए उनके गहन महत्त्व और व्यवहारिक उपयोग का सबूत होता है। इसलिए मिथक को धर्म से अलग करना कठिन होता है, क्योंकि यह सदैव किसी न किसी रूप में धर्म से संबंधित होता है। मिथक मुख्य रूप से ग्रहों या ब्रह्मांड के निर्माण पर विचार करता है और इस प्रकार के मिथक विश्व की उत्पत्ति और व्यापार के संदर्भ में अहम जानकारी प्रदान करते हैं। मेरा उद्देश्य, इस प्रपत्र के माध्यम से दो प्रमुख संस्कृतियाँ- ग्रीक और भारतीय संस्कृति के कृषि से जुड़े मिथक और उनकी देवी - देवताओं के बारे में प्रचलित कहानियों पर प्रकाश डालना है।

बीज शब्द - मिथक, कृषि, ग्रीक संस्कृति, डिमीटर, बलदेव

विश्व में आए सांस्कृतिक परिवर्तन की व्याख्या हम मिथक के माध्यम से कर सकते हैं। मिथक अनेक विश्वास और मूल्यों के वाहक है। मिथकीय एवं पौराणिक पात्रों की कथाओं से हम भौतिक दुनिया में आए परिवर्तन का अनुमान लगा सकते हैं। मिथकों का अध्ययन करने से हमें यह पता चलता है कि शिकार एवं कृषि एक ऐसी ऐतिहासिक प्रथा है जिसके उल्लेख कई जगह पर हमें मिलता है। इन से संबंध मिथक एवं उनका अर्थ हज़ारों सालों में विकसित एवं परिवर्तित हुए हैं।

पाश्चात्य मिथक में कृषि- पाश्चात्य मिथक में सबसे प्रसिद्ध मिथक ग्रीक मिथक है। ग्रीस के लोकप्रिय त्योहारों में कृषि का महत्त्व का ज्ञान उनके पूर्वजों को थे। अरस्तु का कहना है कि फसल की कटाई से जब उन्हे फुर्सत मिलते थे तब वे सभा बनाकर चर्चाएँ करते थे और कभी-कभी बलिदान भी करते थे। मक्सिमुस नामक लेखक का कहना था कि प्राचीन यूनानी कृषि उत्सवों का आयोजन करते थे तथा डायोनिसस ओर डिमीटर को प्रसाद करने के लिए नृत्य किया करते थे।

ग्रीक मिथक में डिमीटर नामक मिथकीय पात्र है जिसे कृषि की देवता मानी जाती है। ग्रीक लोगों का यह विश्वास है कि डिमीटर ने मनुष्यों को दान्य उगाने और कटाई की कला सिखाई जिससे मानव राशि कृषि करना आरंभ किया। डिमीटर के नाम से 'मीटर' शब्द प्राचीन ग्रीक शब्द 'meter' से लिया गया है जिसका अर्थ है माँ। डिमीटर को 'माँ धरती' के रूप में देखी जाती है जिसके कारण यह नाम उनकी भूमिका के साथ मेल खाती है।

डिमीटर को केवल कृषि की देवी के रूप में ही नहीं बल्कि भोजन दाता के रूप में भी देखी जाती थी क्योंकि यूनानी के मानना था कि उन्होंने पृथ्वी की उपज से उनका भरण पोषण किया था। उनका मानना था कि डिमीटर पृथ्वी के चक्रों तथा ऋतुओं का भी प्रभारी थी जो प्रकृति के नियमों का पालन करती है। डिमीटर को विवाह एवं पवित्रता का भी देवी मानी जाती थी जिसके कारण विशेष रूप से महिलाओं द्वारा उनकी पूजा होती थी। 'थेस्मोफोरिया' नामक धार्मिक त्योहार केवल महिलाओं तक सीमित थे।

डिमीटर से प्रार्थना करने की विधि में ग्रीक अपनी मंदिरों को गेहू के ठंडल और मकई की टोकरियों के साथ लाल और पीले फूलों से सजाते थे। डिमीटर की बेटी पेर्सेफोन वसंत एवं वनस्पति की देवी थी जिसकी आराधना डिमीटर के साथ ही किया जाता था। अपनी वेदियों को बैंगनी एवं काले फूलों से सजा कर लोग पेर्सेफोन की पूजा किया करते थे। डिमीटर के नाम कई बलिदान भी होते थे जिनमें उर्वरता की प्रतीक सूअर की भी बलि दी जाती थी। शहद की मिठाइयों एवं फलों को वेदी पर या उनके मंदिर में प्रसाद के रूप में छड़ाए जाते थे।

डिमीटर से संबंधित सबसे प्रसिद्ध मिथक है पाताल के देवता द्वारा डिमीटर की पुत्री का अपहरण जिससे प्राचीन यूनानी, ऋतुओं की व्याख्या करती थी। डिमीटर पेर्सेफोन से बहुत प्यार करती थी। उसे अपनी पुत्री से जो प्रेम एवं संतोष प्राप्त हुई इसके कारण प्रचुर मात्रा में अनाज उगने लगा, सुंदर जंगली फूलों से घास के मैदान भरने लगे, पेट बड़े होने लगे और स्वादिष्ट फल भी पकने लगे।

पेर्सेफोन बड़ी होकर एक सुंदर युवती बनती है। हेडिस नामक देवता उस पर आकर्षित होकर ज़ीउस से उसकी हाथ माँगता है। ज़ीउस उसकी इस प्रस्ताव को इनकार करता है। क्रोध में आकर हेडिस पेर्सेफोन का अपहरण करने का निश्चय करता है। जब पेर्सेफोन अपनी दोस्तों के साथ फूल तोड़ने जाती है तो हेडिस रथ में आकर उसे पकड़कर ले जाता है।

डिमीटर अपनी प्रिय पुत्री से जुदाई सह नहीं पाता और वह बहुत व्याकुल हो जाती है। वह पृथ्वी और वहाँ के लोगों की देखभाल करना छोड़ कर अपनी पुत्री की खोज में लग जाती है। वह अपनी पीड़ा में इतनी डूब जाती है की भूमि पर सभी जीव, जंतु मुरझाने तथा मरने लग जाते हैं। और पृथ्वी पर अकाल पड़ जाता है।

अकाल के कारण पीड़ित लोगों को देखकर ज़ीउस परेशान हो जाता है और ग्रीक देवों की दूत है हेर्मेस को पाताल भेजकर हेडिस से पेर्सेफोन को वापस करने के लिए कहता है। हेडिस इस बात से सहमत हो जाता है और पेर्सेफोन को घर भेजने के लिए तैयार हो जाता है किंतु जाने से पहले वह उसे एक अनार खिलाता है। जो कोई भी पाताल से खाना खाता है उसे वापस आना ही पड़ता था अर्थात एक वर्ष में पहले छह माह पेर्सेफोन अपनी माँ के साथ रहेगी और अगले छह माह वह पाताल में लौट जाएगी। इसलिए ग्रीक के अनुसार जब एक वर्ष के प्रथम छमाही पेर्सेफोन डिमीटर के साथ होती थी तब हर तरफ हरियाली होती थी, फूल खिलते हैं, फसलें उग जाती हैं, पेड़-पौधे भी लंबी हो जाती है किंतु साल की दूसरी छमाही के दौरान पुत्री वियोग में डिमीटर दुखी होने के कारण पृथ्वी हरे-भरे नहीं रहती। कभी-कभी खोर तापमान होती है, पत्ते झड़ते हैं और अन्य जीव-जंतु अकाल से पीड़ित होते हैं।

पुरानी ग्रीक शहर एवं राज्य की समृद्धि का हिस्सा कृषि और आवश्यक अधिशेष का उत्पादन करने की क्षमता पर आधारित था जिसने लोगों को अन्य व्यापार एवं मनोरंजन को आगे बढ़ाने और निर्यात वस्तुओं की एक मात्रा का उत्पादन करने की अनुमति दी, जिन्हें उन आवश्यकताओं के लिए आदान प्रदान किया जा सकता था जिनकी समाज में कमी थी। ग्रीक के जलवायु उपयुक्तता के कारण तीन सबसे अधिक उत्पादक खाद्य पदार्थ थे - अनाज, जैतून एवं वाईन।

ग्रीक के लिए धार्मिक संस्कार पर आधारित त्योहारों में कृषि की प्रासंगिकता और भी अधिक था। नियमित रूप से प्रयोग की जानेवाली ग्रीक कैलेंडर से भिन्न प्रख्यापित त्योहारों का एक अलग कैलेंडर है ताकि कृषि की देवताएँ और उनसे जुड़ी मिथक एवं संस्कारों को उचित समय पर मनाया जा सके। यहाँ खेती से जुड़े हर कार्य मौसम से जुड़े होने के कारण सही क्रम में होता रहता है जैसे की बुआई, कटाई खुदाई और फलों की इकट्ठा करना इन सभी कामों से जुड़ी संस्कार एवं समारोह प्राचीन यूनान (ग्रीक) संस्कृति में होते थे।

इन मान्यताओं और अनुष्ठानों का एक लंबा इतिहास है जो उनके धर्म का हिस्सा है किंतु इनके धर्म के उच्च सिद्धांतों के साथ कोई लेना देना नहीं है। इस प्रकार की रीति रिवाज़ अन्य यूरोपीय लोक कथाओ में पाए जा सकते हैं और जबकि पुराने देवताओं और उनके पंथों का स्थान नए धर्मों ने ले लिया है कि अब पुराने धर्मों का निशान भी मिलना मुमकिन नहीं था। किंतु पुराने ग्रामीण रीति रिवाज़ और विश्वास मध्य युग से लेकर आज तक, धर्मों के तमाम सारे परिवर्तन से प्रभावित हुए बिना ही जीवित रहे।

भारतीय मिथक में कृषि- भारत को लंबे समय से कृषि प्रधान देश माना गया है। ग्रामीण सभ्यता के प्राचीन मूल्य एवं अर्थव्यवस्था आज भी विद्यमान है। भारत का जो कृषि का इतिहास है वह सिंधु घाटी सभ्यता से भी पहले का है। यह बात ज़रूर है कि नवपाषण क्रांति (Neolithic evolution) के दौरान गेहूँ और जौ की खेती की जाती थी और सिंधु घाटी सभ्यता के दौरान सिंचाई का पूर्ण विकास हुआ था। कृषि प्रारंभिक एवं मध्य यूग में फली-फूली। विभिन्न प्रकार के फसल उगाए गए और भारत अपने मसालों के लिए जाना जाने लगा। मसालों का केंद्र में आने से व्यापार बढ़ा जो मुगल काल तक जारी रहा। भारतीय किसानों की तकनीक एवं कौशल बहुत ही उन्नत थे और संभवत: दुनिया में सर्वश्रेष्ठ थे।

इस प्रकार प्राचीन काल से ही भारतीय संस्कृति एवं धर्म में कृषि की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। कृषि से जुड़ी कई प्राचीन भारतीय देव-देवताओं की कथा आज भी भारतियों के हृदय में जीवित है जिनमें प्रत्येक

इश्वर की अपनी विशेषताएँ और पौराणिक कथाएँ हैं।

इंद्र - इंद्र प्राचीन भारत की मिथकीय कथाओं में सबसे प्रसिद्ध देवताओं में से एक है जो गरज, बिजली और बारिश से जुड़ा है। वह अक्सर वज्रायुद्ध नामक हथियार के साथ दिखाई देते हैं जो बिजली का प्रतीक माना जाता है। पृथ्वी में वर्षा की उत्तरदायित्व इंद्र का है जो कृषि की वृद्धि के लिए एक आवश्यक खड़ी है।

वरुण - भारतीय मिथक के एक और महत्त्वपूर्ण देवता है वरुण जो आकाश और समुद्र से संबंधित है। वह समुद्र में सवार करते हैं और लहरों को नियंत्रित करने की क्षमता रखते हैं। फसल की वृद्धि के लिए आवश्यक जल की संरक्षक होने के कारण वह कृषि से जुड़े हैं।

बलराम - भारतीय मिथक में जिस देव को किसानों के संरक्षक माना गया है वह बलराम है। वे ज्ञान के अग्रदूत है जो कृषि के उपकरण एवं धन का प्रतिनिधित्व करता है। कृष्ण के बड़े भाई बलराम बलदेव, बलभद्र, हलधर और हलयुद्ध के नाम से भी जाने जाते हैं। भारतीय मिथक के अनुसार बलराम विष्णु के दस अवतारों की सूची में आठवें अवतार के रूप में आते है।

विकासवादी दृष्टिकोण से यह अवतार उस समय का प्रतिनिधित्व करता है जब मनुष्य ने कृषि पर आधारित जीवन के एक व्यवस्थित शैली को अपनाना शुरू किया था। पुराण में ऐसा कहा गया है कि जब इंद्र और अन्य देव भगवान विष्णु के पास और मथुरा के राजा, राक्षस पुत्र कंस से उनकी रक्षा की माँग की तो भगवान विष्णु ने अपने सिर से एक काला और सफेद बाल तोड़कर उनके हाथ में सौंपा और उनहें यह वचन दिया कि यह दोनों राक्षस के खिलाफ लड़ने के लिए आएँगे। इस तरह पहले बलराम और कृष्ण ने जन्म लिया। बलराम से जुड़ी एक और प्रसिद्ध मिथक यह है कि विष्णु के अवतार होने से अतिरिक्त उनको आदि अनंत शेषनाग के अवतार के रूप में भी देखा गया है जो कई सिर वाले एक नाग है जिस पर भगवान विष्णु क्षीरसागर में विश्राम करते हैं। शेषनाग सभी नागाओं के नेता है। वह अपने फन पर ब्रह्मांड के सभी ग्रहों का धारण किए हुए हैं जिससे यह स्पष्टीकरण मिलता है कि बलराम को हाथियों के झुंड से अधिक शक्तिशाली क्यों कहा जाता है।

लक्ष्मण ने एक बार राम से कहा था कि चूँकि वह राम से छोटे हैं उन्हें अपने बड़े भाई की प्रत्येक आज्ञा का पालन करना होगा। यही कारण है कि अगले अवतार में उनकी बड़े भाई बनने की इच्छा पूरी हुई। भगवान विष्णु छोटे भाई कृष्ण बने और शेषनाग बड़े भाई बलराम। इसलिए हम यह कह सकते हैं कि शेषनाग विष्णु से अविभाज्य है क्योंकि जब विष्णु राम के रूप में पृथ्वी पर अवतरित हुए तो शेषनाग ने लक्ष्मण के रूप में अवतार लिया और जब विष्णु ने कृष्ण के रूप में अवतार लिया तो शेषनाग उनके बड़े भाई बलराम के रूप में उनके साथ थे।

बलराम को कृषि के भगवान के रूप में भारतीय मिथक में उल्लेखित किया है। वे बहुत ही शक्तिशाली थे। उनके हथियार गदा और हल थे। वे हल चलाते थे और गदे से युद्ध करते थे। 'विष्णुधर्मोत्तर पुराण' में ऐसा कहा गया है कि बलराम की पूजा उन लोगों द्वारा की जानी चाहिए जो कृषि में सफलता प्राप्त करना चाहते हैं और शक्तिशाली बनना चाहते हैं।

भारत की संस्कृति विरासत अन्य सभ्यता से अद्वितीय है। भारत में कृषि की उत्पत्ति 7500 - 4000 ई पूर्व के नवपाषाण युग से शुरू होता है। इसने आदि मानव की जीवन शैली को बदल दिया था। कृषि की कारण जंगली जामुनों की खानाबदोश शिकारी से लेकर भूमि में स्वयं खेती करके अपने लिए अन्न इकट्ठा करने वाले सभ्य मनुष्य बने। प्राचीन काल के संतों के ज्ञान और उपदेश कृषि के लिए सदैव लाभकारी रहा है। यह ज्ञान तथा कार्यन्वित प्रथाओं को पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ाया। प्राचीन काल के किसानों ने खेती ऐसे तकनीक अपनाएँ जो पर्यावरण को अनुकूल थे जैसे फसल चक्र, मिश्रित खेती और फसल आदि। भारत के पुराने पीढ़ियों के कृषकों के पास कृषि से संबंधित जो ज्ञान का स्तर था वह प्राचीन काल के श्रेष्ठ रामायण और महाभारत जैसे महाकाव्य में दर्शाया गया है।

कहा जाता है कि विश्व के कई प्रसिद्ध धर्मों का जन्म कृषि क्रांति (Agricultural revolution) के समय हुआ था। इस विषय पर किए गए अध्ययनों ने इस सिद्धांत को साबित भी किया है। लोगों ने इन धर्मों का प्रचार मिथक के माध्यम से किया जिसके कारण मनुष्य के हृदय में उन धर्मों के प्रति आस्था जागना शुरू हुआ। हर जाति और हर संस्कृति के लोगों के बीच अपने फसल के उपज एवं खेती के समय उनके ईश्वर की पूजा एवं प्रार्थना करने का रिवाज़ आरंभ हुआ।

किसी भी राष्ट्र का हृदय वहाँ की कृषि और कृषक में बसता है। किसान एवं मज़दूर न सिर्फ एक बड़ी आबादी को खिलाने की क्षमता रखते हैं बल्कि वह भोजन से संबधित उत्पादों का निर्यात के लिए भी ज़िम्मेदार है। कृषि का प्रभाव एक देश के सामाजिक एवं सांस्कृतिक पक्ष और वहाँ की अर्थ व्यवस्था पर भी पड़ता है।

000

संदर्भ-

1 पाश्चात्य साहित्य चिंतन - निर्मला जैन - राधा कृष्ण प्रकाशन - 1990, 2 भारतीय मिथक कोश - उषा पुरी - नाषणल पब्लिषिंग हाऊस - 2004, 3 भारत में कृषि - रंजित सिंह - नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया - 2021, 4संस्कृति, राज्य, कलाएँ और उनसे परे - बाल्मीकि प्रसाद सिंह - राजकमल प्रकाशन - 1999, 5Mythology; Timeless Tales Of Gods & Heroes - Edith Hamilton - Black Dog & Leventhal Publishers - 1990,

अन्य संदर्भ- 1 The Greek God of Farming and Agriculture https://www.twinkl.co.in/teaching-wiki/the-greek-god-of-farming-and-agriculture, 2)Rural Customs And Festivals https://sacred-texts.com/cla/gpr/gpr06.htm 3)10 Interesting Facts about Balarama - The God of Agriculture https://vedicfeed.com/facts-balarama-god-of-agriculture/

Avinashilingam Institute for Home Science and Higher Education for Women
(Deemed to be University Estd. u/s 3 of UGC Act 1956, Category A by MHRD)
Re-accredited with 'A++' Grade by NAAC.CGPA 3.65/4, Category I by UGC
Coimbatore – 641 043, Tamil Nadu, India

PLAGIARISM CHECK REPORT (THESES)

1.	Name of the Research Scholar	Niraja T K
2.	Roll No. and Year of Registration	20PHHIF004, 2021
3.	Department	Hindi
4.	Name of the Research Guide	Dr. G. Shanthi
5.	Title of the Thesis / Dissertation	Narendra Kohli aur Amish Tripathi Ke Upanyasone mein Mithak Ka Thulnatmak Adhyayan (Ram Katha Shrinkala Ke Vishesh Sandarbh mein)
6.	Similarity Content (%) Identified	**1%**
7.	Software Used	Drillbit
8.	Date of Verification	31-05-2024

Note : The report is excluding 14 Consecutive words, Review of Literature and Quoted Materials.

Checked by :

K. Jabal.

for **Information Scientist**

Research Scholar

31.05.24

Assistant Librarian

G. Shanthi

Research Guide

Date: 31-05-2024

The Report is Generated by DrillBit Plagiarism Detection Software

Selected Language Hindi

Submission Information

Author Name	Niraja T K
Title	Narendra Kohli aur Amish Tripathi Ke Upanyasone mein Mithak Ka Thulnat mak Adhyayan (Ram Katha Shrinkala Ke Vishesh Sandarbh mein)
Paper/Submission ID	1914335
Submitted by	library@avinuty.ac.in
Submission Date	2024-05-31 17:07:22
Document type	Thesis

Result Information

Similarity	**1%**

A Unique QR Code use to View/Download/Share Pdf File

DrillBit

DrillBit Similarity Report

1	16	A	A-Satisfactory (0-10%) B-Upgrade (11-40%) C-Poor (41-60%) D-Unacceptable (61-100%)
SIMILARITY %	MATCHED SOURCES	GRADE	

LOCATION	MATCHED DOMAIN	%	SOURCE TYPE
1	Thesis Submitted to Shodhganga, shodhganga.inflibnet.ac.in	<1	Publication
2	Thesis Submitted to Shodhganga, shodhganga.inflibnet.ac.in	<1	Publication
3	Thesis Submitted to Shodhganga, shodhganga.inflibnet.ac.in	<1	Publication
4	Thesis Submitted to Shodhganga, shodhganga.inflibnet.ac.in	<1	Publication
5	hi.wikipedia.org	<1	Internet Data
6	Thesis Submitted to Shodhganga, shodhganga.inflibnet.ac.in	<1	Publication
7	Thesis Submitted to Shodhganga, shodhganga.inflibnet.ac.in	<1	Publication
8	Paper Submitted to Deen Dayal Upadhyay Gorakhpur University, Gorakhpur	<1	Student Paper
9	Paper Submitted to Kumaun University, Nainital	<1	Student Paper
10	Paper Submitted to Deen Dayal Upadhyay Gorakhpur University, Gorakhpur	<1	Student Paper
11	Thesis Submitted to Shodhganga, shodhganga.inflibnet.ac.in	<1	Publication
12	Paper Submitted to Kumaun University, Nainital	<1	Student Paper
13	mib.gov.in	<1	Publication